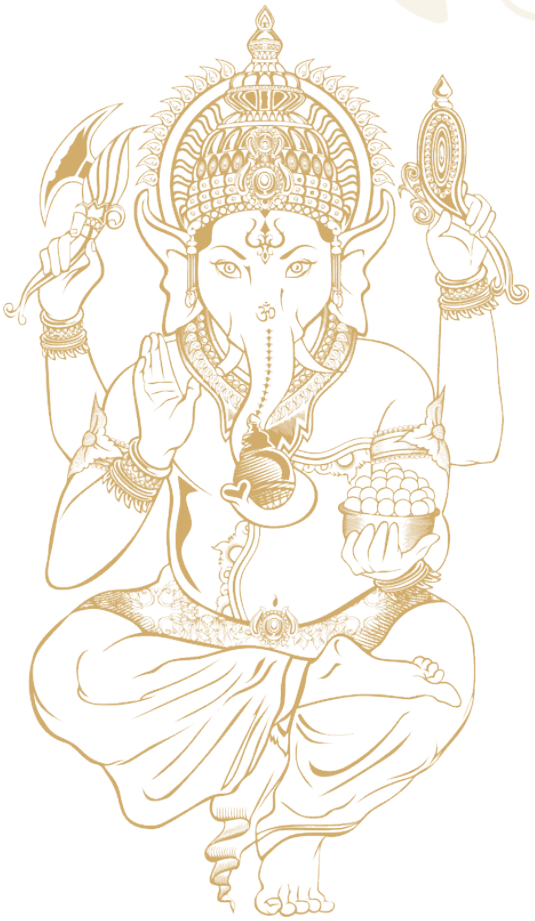

H

08 May 1966

12:30 PM

Saharanpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121716601**

तिथि 08/05/1966 **समय** 12:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Saharanpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:22:58
अक्षांश 29:58:00 उत्तर **रेखांश** 77:33:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:12:51 घं
वेलान्तर	00:03:32 घं
सूर्योदय	05:32:03 घं
सूर्यास्त	19:01:03 घं
चैत्रादि संवत	2023
शक संवत	1888
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	मूल
योग	सिद्ध
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	यो-योगेश
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

केतु 3वर्ष 7मा 0दि

राहु

07/12/2012
07/12/2030

राहु	20/08/2015
गुरु	13/01/2018
शनि	18/11/2020
बुध	08/06/2023
केतु	25/06/2024
शुक्र	26/06/2027
सूर्य	20/05/2028
चन्द्र	19/11/2029
मंगल	07/12/2030

योगिनी

उल्का 3वर्ष 0मा 26दि

धान्या

03/06/2023
03/06/2026

धान्या	03/09/2023
भ्रामरी	03/01/2024
भद्रिका	03/06/2024
उल्का	02/12/2024
सिद्धा	03/07/2025
संकटा	04/03/2026
मंगला	03/04/2026
पिंगला	03/06/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			00:30:15	सिंह	मघा	1	केतु	केतु	---	0:00			
सूर्य			23:51:16	मेष	भरणी	4	शुक्र	शनि	उच्च राशि	1.83	आत्मा	पितृ	सम्पत
चंद्र			06:30:26	धनु	मूल	2	केतु	राहु	सम राशि	0.99	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	21:43:40	मेष	भरणी	3	शुक्र	गुरु	स्वराशि	1.33	अमात्य	भ्रातृ	सम्पत
बुध			04:19:38	मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	सम राशि	0.73	ज्ञाति	ज्ञाति	जन्म
गुरु			07:07:51	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.44	मातृ	धन	साधक
शुक्र			10:02:52	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	शुक्र	उच्च राशि	1.34	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि			03:05:19	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.06	कलत्र	आयु	वध
राहु			01:55:49	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			01:55:49	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	मित्र राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

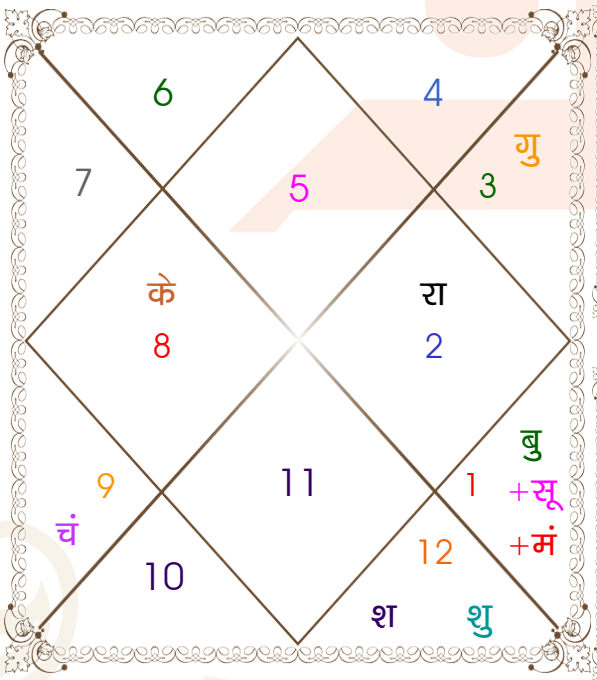

चन्द्र कुंडली

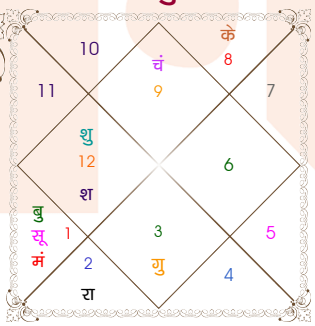

नवमांश कुंडली

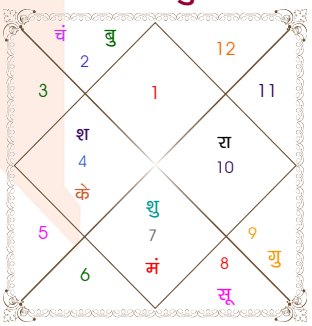

सर्वाष्टकवर्ग

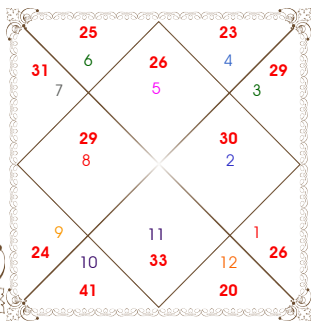

दशमांश कुंडली

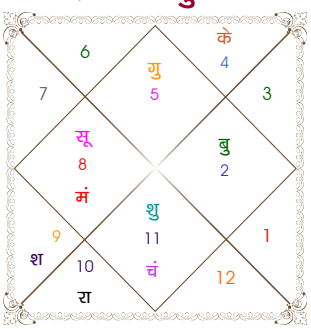

नक्षत्रफल

आप मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी आद्य, योनि श्वान, वर्ग मृग तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का पहला अक्षर "यो" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा, योगेश।

गण्डमूल नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने से जातक की माता को अरिष्ट होता है अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान से शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप सम्पन्न करने चाहिए तथा 27 दिन के बाद पुनः जब यह नक्षत्र आए तो इस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक शान्ति करने से इसका दोष प्रायः समाप्त हो जाएगा तथा सम्बंधित जातक सुखपूर्वक रहेगा।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश
मानसागरी

आप एक सौभाग्य शाली पुरूष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों का सुखपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही धन वैभव से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनवान व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आप जीवन में वाहन सुख भी प्राप्त करेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य से आप उत्तम रहेंगे तथा चंचलता की प्रवृति का आपमें अभाव रहेगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। शास्त्र ज्ञान में भी आपकी रूचि रहेगी तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन जीवन में यदा कदा आपको वायुजनित रोगों से व्याकुलता की भी अनुभूति होगी तथा इससे आप पीड़ित रहेंगे।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप बोलने में अत्यन्त ही दक्ष रहेंगे तथा अपनी इस कला से अपने अधिकाँश कार्यों से सफलता प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अपनी अभिमानी प्रवृति का भी अन्य लोगों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। आप बिना किसी ठोस प्रमाण के अपने विचारों को अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे जिससे लोग आपकी बातों पर विशेष ध्यान नहीं देंगे।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।

जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आपका जीवन में धन ऐश्वर्य तथा सम्मान से परिपूर्ण रहेंगे। आपकी कार्य शैली स्थिरता के गुण से युक्त रहेगी तथा अन्य प्रकार की सम्पत्तियों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा कंठावृति दीर्घ रहेगी। साथ ही आपके कान ओंठ एवं दांतों में भी स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। आपकी भुजाएं भी पूर्ण रूपेण मांसल होकर स्थूल रहेंगी। पिता से प्राप्त धन का आप जीवन में सुखपूर्वक उपयोग करेंगे। आपके मन में दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी। फलतः जरूरत मन्द लोगों को आप समयानुसार यथा शक्ति दान देते रहेंगे। लेखन कार्य की ओर भी आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आप शारीरिक शक्ति से पूर्ण सक्षम रहेंगे। जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में आप निपुण रहेंगे तथा अपने भाषणों से लोगों को प्रभावित करके प्रसन्न रखेंगे। आप विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में भी दक्ष रहेंगे। चित्रकारी आपका शौक रहेगा तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। गम्भीरता से कार्यों को करना आपकी प्रवृति रहेगी। आपकी धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इसके विषय में ज्ञान भी प्रर्याप्त मात्रा में रहेगा। वन्धु वर्ग में आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपको प्रेम तथा सम्मान एवं सौहार्द से ही वश में किया जा सकेगा। बल पूर्वक आप कुछ भी करने को तैयार नहीं होंगे। साथ ही वातजनित रोगों से भी आप यदा कदा कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आँखें वृताकार होंगी तथा हाथ भी लम्बे रहेंगे। साथ ही सीना भी पूर्ण रूप से विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव की मात्रा बढ सकती है। आप जल के समीप निवास करना पसन्द करेंगे। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी तथा कठिन से कठिन विषय के ज्ञान को धारण करने में आप सफल रहेंगे। आप हृदय से हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपके शरीर की अस्थियां भी पुष्ट रहेंगी।कृतज्ञता के गुण से आप युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर उनके प्रति आभार प्रकट करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आपको निष्क्रिय होकर बैठना अच्छा नहीं लगेगा अतः किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके वाक्चातुर्य से सभी प्रभावित रहेंगे तथा हृदय से सम्मान करेंगे। त्याग की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेगा तथा अपने अधिकाँश कार्यो को साहस पूर्ण सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित एवं भयभीत रहेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोगों के मध्य आप प्रिय तथा आदरणीय रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्य तथा कलाओं में दक्षता प्राप्त करेंगे। सदाचारी जीवन यापन करने में आप पूर्ण रूपेण यत्नशील रहेंगे। आपकी प्रवृति हमेशा स्पष्ट बोलने की रहेगी तथा अपने विचारों को उन्मुक्त भाव से अन्य जनों के समक्ष स्पष्ट करेंगे। साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे तथा अनावश्यक आर्थिक संकट से सुरक्षित रहेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके समस्त शरीर के अंग सुन्दर एवं सुगठित रहेंगे। साथ ही अपने

परिवार या कुल में श्रेष्ठ तथा सम्मानीय रहेंगे। इंजीनियरी या चित्रकला के क्षेत्र में आप जीवन में विशेष सफलता अर्जित कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप में वीरता का गुण स्वभाव से ही विद्यमान रहेगा। आप एक सत्यवादी व्यक्ति होंगे तथा आजीवन सत्य के अनुपालन करने के लिए प्रयत्न शील रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी एवं चंचलता का इसमें अभाव रहेगा अतः आपके समस्त कार्य दृढता पूर्वक सम्पन्न होंगे। सत्वगुण से भी आप सुप्रसन्न रहेंगे तथा आपके हृदय में अन्य लोगों के प्रति द्वेष की भावना नहीं रहेगी। अपितु सब के प्रति स्नेह का भाव ही विद्यमान रहेगा। आपका स्वरूप देखने में सुन्दरता से युक्त रहेगा तथा आपको गुणवती तथा बुद्धिमती स्त्री की प्राप्ति होगी। जिससे गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। शरीर से आप स्थूल होंगे तथा कभी कभी आप ऐसा कार्य करेंगे। जिससे समस्त कुल या परिवार को परेशानी या चिन्ता की अनुभूति करनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आपकी लोकप्रियता भी रहेगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा समाज में श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र समझे जाएंगे। साथ ही आप अपने भाईयों में भी उत्तम होंगे। आपकी प्रवृति भी धार्मिकता से युक्त रहेगी तथा देवता, ब्राहमण एवं गुरूओं के प्रति आपके मन पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रहेगा तथा समयानुसार आप इनकी पूजा एवं सेवा कर्म में तत्पर रहेंगे। चलने में आपकी गति दर्शनीय रहेगी। परन्तु सहन शक्ति का आप में प्रायः अभाव ही दृष्टि गोचर होगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव अधिक तथा व्यर्थ बोलने वाला होगा। आपका हृदय भी कठोरता के भाव से अधिक युक्त रहेगा एवं करूणा की न्यूनता रहेगी परन्तु आप एक निर्भय तथा साहसी व्यक्ति होंगे। अतः निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप में उग्रता की भी प्रबलता रहेगी अतः प्रायः छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित होकर इसका प्रदर्शन करेंगे। अपने कार्य सिद्धि के लिए कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके अन्दर शारीरिक शक्ति का अभाव

नहीं रहेगा तथा अन्य जनों से यदा कदा परस्पर विवाद होता रहेगा।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह आदि रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक रहेगा तथा वाणी में भी कभी कभी कठोरता का भाव विद्यमान होगा। जो श्रोता को अच्छा नहीं लगेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उत्साह पूर्वक सर्वदा अपने कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। फलतः अधिकाँश कार्यों में सकारात्मक फलों की प्राप्ति होगी। आप साहस तथा निर्भयता से युक्त होकर समस्त सांसारिक समस्याओं का सामना करेंगे। तथा उनके निराकरण में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे। बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही माता पिता के प्रति आपके मन में निःस्वार्थ श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा तथा इसी भाव से आप हमेशा उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र

होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीय अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र, वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो, मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य कार्यों में सिद्धि नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए एवं मंगलवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीतपुष्प, चने की दाल, हल्दी आदि, पदार्थों का श्रद्धा पूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा

अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप कराने चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल कम होंगे तथा अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।